A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

जिला सिरमौर के संस्कार गीतों का अध्ययन

Amritanjali Sharma[1], Dr. Purvi Lunial[2]
1 Ph.D. Research Scholar, Akal College of Arts and Social Sciences, Eternal University, Baru Sahib, District Sirmaur, Himachal Pradesh
2 Research Supervisor, Akal College of Arts and Social Sciences, Eternal University, Baru Sahib, District Sirmaur, Himachal Pradesh
Published on 01.09.2026

सारांश

हिमाचल प्रदेश का जिला सिरमौर अपनी समृद्ध लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ की लोकसंगीत परंपरा में संस्कार गीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये गीत मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों—जन्म, नामकरण, मुंडन, उपनयन, विवाह तथा मृत्यु आदि अवसरों पर गाए जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में जिला सिरमौर में प्रचलित संस्कार गीतों की अवधारणा, स्वरूप, सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व तथा लोकजीवन में उनकी भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में मुख्य रूप से जन्म, विवाह, उपनयन तथा मृत्यु संस्कार से संबंधित गीतों का विवेचन किया गया है। इन गीतों में स्थानीय समाज की भावनाओं, धार्मिक आस्थाओं, लोकविश्वासों, पारिवारिक संबंधों, रीति-रिवाजों तथा सामाजिक मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति दिखाई देती है। साथ ही, संस्कार गीतों की भाषिक विशेषताओं के अंतर्गत सिरमौरी बोली, स्थानीय शब्दावली, मुहावरों, लय, छंद तथा विभिन्न काव्यात्मक अलंकारों का भी अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संस्कार गीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सिरमौर की सांस्कृतिक पहचान, सामूहिक स्मृति और पारंपरिक ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। आधुनिकता, वैश्वीकरण, बदलती जीवनशैली तथा आधुनिक मनोरंजन के साधनों के बढ़ते प्रभाव के कारण इन गीतों की पारंपरिक गायन परंपरा प्रभावित हो रही है। अतः इस अमूल्य लोकधरोहर के संरक्षण हेतु संस्कार गीतों का व्यवस्थित संकलन, प्रलेखन, शोध, डिजिटल अभिलेखन तथा शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से नई पीढ़ी तक उनका प्रसार आवश्यक है।

मुख्य शब्द: *संस्कार गीत, जिला सिरमौर, लोकगीत, लोकसंगीत, लोकसंस्कृति, सिरमौरी बोली, लोकपरंपरा, सांस्कृतिक विरासत, जीवन-संस्कार, सांस्कृतिक संरक्षण।*

1. प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश का जिला सिरमौर अपनी समृद्ध लोकसंस्कृति, लोकपरंपराओं एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के लोकगीत जनजीवन की भावनाओं, सामाजिक संबंधों, धार्मिक मान्यताओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों के सशक्त संवाहक हैं। सिरमौर की लोकसंगीत परंपरा में संस्कार गीतों का विशेष स्थान है, जो मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों—जन्म, नामकरण, मुंडन, उपनयन, विवाह तथा मृत्यु आदि अवसरों पर गाए जाते हैं। संस्कार गीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे समाज की सामूहिक चेतना, लोकविश्वास, रीति-रिवाजों और परंपराओं के जीवंत दस्तावेज भी हैं। इन गीतों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सांस्कृतिक धरोहर का हस्तांतरण होता है तथा सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों का संरक्षण सुनिश्चित होता है। सिरमौर जिले के संस्कार गीतों में स्थानीय बोली, लोकजीवन, धार्मिक आस्था, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक संरचना का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, नगरीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक लोकगीतों की परंपरा धीरे-धीरे प्रभावित हो रही है। ऐसी स्थिति में सिरमौर के संस्कार गीतों का अध्ययन, संरक्षण और प्रलेखन अत्यंत आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सिरमौर जिले में प्रचलित संस्कार गीतों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण तथा उनके सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक महत्व को स्पष्ट करना है। साथ ही, यह अध्ययन बदलते सामाजिक परिवेश में इन गीतों की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है।

2. संस्कार गीतों की अवधारणा

(क) संस्कार गीत का अर्थ एवं परिभाषा

'संस्कार' शब्द का अर्थ है – परिष्कार, शुद्धिकरण अथवा जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाली प्रक्रिया। भारतीय संस्कृति में मनुष्य के जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न संस्कारों के माध्यम से मर्यादित एवं अनुशासित किया जाता है। इन संस्कारों के अवसर पर जो गीत लोकसमुदाय द्वारा गाए

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

जाते हैं, उन्हें संस्कार गीत कहा जाता है। संस्कार गीत लोकसाहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा हैं, जिनमें किसी विशेष संस्कार से संबंधित भावनाओं, परंपराओं, रीति-रिवाजों तथा सामाजिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति होती है। ये गीत लोकजीवन की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक होते हैं तथा समाज की सामूहिक स्मृति को संरक्षित रखते हैं।

(ख) भारतीय लोकजीवन में संस्कार गीतों का स्थान

भारतीय लोकजीवन में संस्कार गीतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत विविध संस्कृतियों, भाषाओं एवं लोकपरंपराओं का देश है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र में जीवन के विभिन्न संस्कारों से जुड़े विशिष्ट गीत प्रचलित हैं। जन्म, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, उपनयन, विवाह तथा मृत्यु जैसे अवसरों पर संस्कार गीत गाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। ये गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक एकता, पारिवारिक संबंधों, धार्मिक आस्थाओं तथा नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का माध्यम भी हैं। संस्कार गीतों के माध्यम से लोकसमाज अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखता है तथा नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं से परिचित कराता है।

(ग) लोकगीतों और संस्कार गीतों का संबंध

संस्कार गीत, लोकगीतों की एक प्रमुख शाखा हैं। लोकगीतों में लोकजीवन की भावनाएँ, अनुभव, परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य अभिव्यक्त होते हैं, जबकि संस्कार गीत विशेष रूप से जीवन के संस्कारों से संबंधित अवसरों पर गाए जाते हैं। इस प्रकार संस्कार गीत लोकगीतों का ही एक विशिष्ट रूप हैं। लोकगीतों और संस्कार गीतों दोनों की रचना सामूहिक रूप से होती है तथा ये मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। दोनों में स्थानीय भाषा, लोकविश्वास, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक चेतना का समावेश होता है। इसलिए संस्कार गीतों को लोकगीत परंपरा का अभिन्न अंग माना जाता है, जो लोकसंस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. जिला सिरमौर के प्रमुख संस्कार गीत

जिला सिरमौर की लोकसांस्कृतिक परंपरा में संस्कार गीतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ये गीत मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों एवं अवसरों से जुड़े होते हैं तथा लोकजीवन की भावनाओं, मान्यताओं और परंपराओं को अभिव्यक्त करते हैं। सिरमौर के संस्कार गीत मुख्यतः जन्म, विवाह, उपनयन तथा मृत्यु संस्कारों से संबंधित हैं।

(क) जन्म संस्कार गीत

जन्म संस्कार मानव जीवन का प्रथम संस्कार माना जाता है। सिरमौर क्षेत्र में शिशु के जन्म के अवसर पर परिवार और समुदाय द्वारा हर्षोल्लास के साथ विभिन्न गीत गाए जाते हैं। इन्हें जन्म संस्कार गीत या सोहर गीत कहा जाता है। इन गीतों में नवजात शिशु के उज्ज्वल भविष्य, परिवार की खुशहाली तथा देवी-देवताओं के आशीर्वाद की कामना की जाती है। नामकरण संस्कार के समय भी विशेष गीत गाए जाते हैं, जिनमें बच्चे के जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता की मंगलकामना व्यक्त होती है। जन्म संस्कार गीतों के माध्यम से माता-पिता, परिजनों और समाज की सामूहिक प्रसन्नता तथा भावनात्मक जुड़ाव का चित्रण मिलता है।जन्म संस्कार के अवसर पर सिरमौर में नवजात शिशु के स्वागत हेतु मंगल गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में परिवार की प्रसन्नता एवं देवी-देवताओं के आशीर्वाद की कामना व्यक्त होती है। उदाहरण:

"घर आई खुशियों की बहार,
लाडले ने लिया अवतार।
देवी-देवता दें आशीष,
भर जाए जीवन में उजियार।"

इन गीतों में माता-पिता की खुशी, परिवार की आशाएँ तथा सामाजिक सहभागिता का चित्रण मिलता है।

(ख) विवाह संस्कार गीत

विवाह संस्कार सिरमौर के लोकजीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। विवाह समारोह के विभिन्न चरणों—सगाई, बटना, मेहंदी, भात, बारात, फेरे तथा विदाई—पर अनेक प्रकार के संस्कार गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में हर्ष, उल्लास, प्रेम, हास्य, पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों का सुंदर चित्रण मिलता है। विवाह गीतों के माध्यम से सामाजिक मर्यादाओं, पारिवारिक मूल्यों, स्त्री-पुरुष संबंधों तथा सामुदायिक एकता की भावना को अभिव्यक्ति मिलती है। विशेष रूप से विदाई गीतों में करुणा, वात्सल्य और भावनात्मक संवेदनाओं का अत्यंत मार्मिक

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

चित्रण देखने को मिलता है।विवाह संस्कार सिरमौर की लोकसंस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है। विवाह के विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग गीत गाए जाते हैं।

मेहंदी गीत

"मेहंदी रच गई हाथों में, सज गई मेरी सखियों की टोली।
आज मेरे घर आई खुशियां, बजने लगी ढोलक बोली।"

विदाई गीत

"बाबुल का आंगन छूटे आज,
नयनों से बरसे पानी।ससुराल चली बेटी प्यारी,
देकर सबको निशानी।"

इन गीतों में प्रेम, वात्सल्य, पारिवारिक संबंध और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है।

(ग) उपनयन एवं अन्य संस्कार गीत

सिरमौर क्षेत्र में उपनयन, मुंडन तथा अन्य धार्मिक संस्कारों से संबंधित गीत भी लोकपरंपरा का महत्वपूर्ण भाग हैं। इन संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत धार्मिक आस्था, वैदिक परंपराओं तथा लोकविश्वासों को अभि व्यक्त करते हैं। इन गीतों में देवी-देवताओं का स्मरण, धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व तथा व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास की कामना की जाती है। लोकसमाज इन संस्कारों को जीवन की पवित्र प्रक्रिया मानता है, इसलिए इन अवसरों पर गाए जाने वाले गीत धार्मिक श्रद्धा और सांस्कृतिक मूल्यों से परिपूर्ण होते हैं।उपनयन, मुंडन तथा अन्य धार्मिक संस्कारों के अवसर पर धार्मिक भावनाओं से युक्त गीत गाए जाते हैं। उदाहरण:

"गुरु का ज्ञान मिले बालक को, जीवन में उजियारा हो।
धर्म-कर्म के पथ पर चलकर, उसका जीवन न्यारा हो।"

इन गीतों में धार्मिक आस्था, नैतिक शिक्षा तथा लोकविश्वासों का समावेश होता है।

(घ) मृत्यु संस्कार गीत

मृत्यु संस्कार जीवन का अंतिम संस्कार माना जाता है। सिरमौर में मृत्यु के अवसर पर शोक, विरह और स्मृति से जुड़े लोकगीत गाए जाते हैं। इन गीतों में मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान, उसके जीवन के स्मरण तथा परिवार के दुःख की अभिव्यक्ति होती है। मृत्यु संस्कार गीत केवल शोक प्रकट करने तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे भारतीय जीवन-दर्शन को भी व्यक्त करते हैं। इनमें जीवन की नश्वरता, आत्मा की अमरता तथा जन्म-मृत्यु के शाश्वत चक्र की अवधारणा का वर्णन मिलता है। ये गीत शोकग्रस्त परिवार को मानसिक संबल प्रदान करने के साथ-साथ सामाजिक सहानुभूति और सामूहिक संवेदना को भी व्यक्त करते हैं। मृत्यु संस्कार से जुड़े गीतों में शोक, स्मृति तथा जीवन की नश्वरता का भाव व्यक्त किया जाता है।

उदाहरण:

"आया जो इस जग में, एक दिन उसे जाना है।
कर्मों की अमर कहानी ही, पीछे रह जाना है।"

इन गीतों में जीवन-दर्शन, आत्मा की अमरता तथा सामाजिक संवेदनाओं का चित्रण मिलता है।

4. संस्कार गीतों की भाषिक विशेषताएँ

जिला सिरमौर के संस्कार गीत अपनी भाषिक संरचना, लोकाभिव्यक्ति तथा काव्यात्मक गुणों के कारण विशेष महत्व रखते हैं। इन गीतों में स्थानीय बोली, लोकजीवन से जुड़े शब्दों तथा साहित्यिक सौंदर्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। संस्कार गीतों की भाषिक विशेषताएँ न केवल उनकी कलात्मकता को बढ़ाती हैं, बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को भी सुरक्षित रखती हैं।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

(क) सिरमौरी बोली का प्रयोग

सिरमौर के संस्कार गीतों की सबसे प्रमुख विशेषता इनमें प्रयुक्त सिरमौरी बोली है। यह बोली स्थानीय जनजीवन की भावनाओं और अनुभवों को सहज एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। संस्कार गीतों में प्रयुक्त शब्द, वाक्य-विन्यास तथा उच्चारण क्षेत्रीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए सिरमौरी गीतों में "रै", "कने", "जाणो", "आयो", "भलो", "ध्याण" आदि शब्दों का प्रयोग सामान्यतः देखने को मिलता है। ये शब्द गीतों को स्थानीयता प्रदान करते हैं तथा श्रोताओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं।

(ख) स्थानीय शब्दावली एवं मुहावरों का महत्व

संस्कार गीतों में स्थानीय शब्दावली, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का व्यापक प्रयोग किया जाता है। ये शब्द और मुहावरे लोकजीवन के अनुभवों, सामाजिक संबंधों तथा सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं। उदाहरणस्वरूप विवाह गीतों में रिश्तों, पारिवारिक संबोधनों तथा कृषि एवं प्रकृति से जुड़े शब्दों का प्रयोग अधिक होता है। इसी प्रकार जन्म एवं मृत्यु संस्कार गीतों में लोकविश्वासों और धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने वाले मुहावरों का प्रयोग मिलता है। स्थानीय शब्दावली गीतों को जीवंत, प्रभावशाली और जनसामान्य के निकट बनाती है।

(ग) काव्यात्मक सौंदर्य एवं अलंकार

सिरमौर के संस्कार गीतों में काव्यात्मक सौंदर्य का विशेष महत्व है। इनमें लय, छंद, तुकांतता तथा संगीतात्मकता का सुंदर समन्वय मिलता है। गीतों की भाषा सरल, सहज और भावपूर्ण होती है, जिससे वे जनमानस को आसानी से प्रभावित करते हैं। इन गीतों में विभिन्न अलंकारों का भी प्रयोग देखने को मिलता है, जैसे—

उपमा अलंकार – किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी अन्य वस्तु से करना।

रूपक अलंकार – किसी वस्तु को सीधे दूसरी वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना।

अनुप्रास अलंकार – समान वर्णों की आवृत्ति द्वारा सौंदर्य उत्पन्न करना।

मानवीकरण अलंकार – प्रकृति या निर्जीव वस्तुओं को मानवीय गुण प्रदान करना।

उदाहरण:

"चाँद सी मुखड़ी बेटी मेरी, फूलों जैसी मुस्कान।"

यहाँ उपमा अलंकार का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार प्रकृति, पर्वत, नदियों और फूलों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति संस्कार गीतों को अधिक प्रभावशाली बनाती है।

5. संस्कार गीतों की सांस्कृतिक विशेषताएँ

संस्कार गीत जिला सिरमौर की लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। इन गीतों में जन्म, विवाह, उपनयन और मृत्यु जैसे जीवन-संस्कारों से जुड़ी परंपराएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इनके माध्यम से समाज की लोकरीतियाँ, धार्मिक विश्वास और पारंपरिक मूल्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रहते हैं। इन गीतों में सामाजिक एकता और सामूहिकता का भाव भी प्रमुख रूप से मिलता है। संस्कारों के अवसर पर परिवार, रिश्तेदार और समाज के लोग एकत्र होकर गीत गाते हैं, जिससे आपसी प्रेम, सहयोग और सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। सिरमौर के संस्कार गीतों में स्त्री-जीवन का विशेष चित्रण मिलता है। विशेषकर विवाह गीतों में बेटी, बहन, माँ और सास-बहू के संबंधों की भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। इस प्रकार ये गीत पारिवारिक संबंधों, लोकभावनाओं और सांस्कृतिक चेतना के सशक्त प्रतीक हैं।

6. संस्कार गीतों में लोकजीवन का प्रतिबिंब

संस्कार गीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे लोकजीवन का सजीव दर्पण भी हैं। जिला सिरमौर के संस्कार गीतों में वहाँ की सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक मान्यताओं तथा आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण मिलता है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

(क) सामाजिक संरचना

संस्कार गीतों में परिवार एवं समाज की संरचना का यथार्थ चित्रण मिलता है। इनमें माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, सास-बहू तथा अन्य पारिवारिक संबंधों की भावनात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। विवाह एवं जन्म संस्कार गीतों में सामूहिक सहभागिता और सामाजिक एकता का भाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है।

(ख) धार्मिक आस्था एवं लोकविश्वास

संस्कार गीतों में देवी-देवताओं की स्तुति, धार्मिक अनुष्ठानों तथा लोकविश्वासों का उल्लेख मिलता है। जन्म, विवाह एवं अन्य संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले गीत ईश्वर से सुख, समृद्धि एवं मंगल की कामना करते हैं। इन गीतों में स्थानीय देवताओं तथा पारंपरिक मान्यताओं के प्रति लोगों की श्रद्धा भी व्यक्त होती है।

(ग) आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

संस्कार गीतों में लोकजीवन की आर्थिक स्थिति तथा सांस्कृतिक परिवेश का भी प्रतिबिंब दिखाई देता है। इनमें कृषि, पशुपालन, पारंपरिक व्यवसायों तथा ग्रामीण जीवन से जुड़े प्रसंगों का वर्णन मिलता है। साथ ही, स्थानीय वेशभूषा, खान-पान, रीति-रिवाज और उत्सवों का चित्रण सिरमौर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है।

7. आधुनिकता का प्रभाव

आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से सिरमौर सहित समूचे हिमाचल प्रदेश की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। संस्कार गीत भी इस परिवर्तन से अछूते नहीं हैं। बदलती जीवनशैली, तकनीकी विकास और आधुनिक मनोरंजन के साधनों ने इन गीतों की परंपरा को प्रभावित किया है।

(क) बदलती जीवनशैली का प्रभाव

वर्तमान समय में संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है। संस्कारों के आयोजन भी पहले की अपेक्षा अधिक संक्षिप्त और औपचारिक हो गए हैं। परिणामस्वरूप संस्कार गीतों के गायन की परंपरा धीरे-धीरे कम होती जा रही है। आधुनिक संगीत और डिजिटल माध्यमों के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक लोकगीतों का स्थान कई बार फिल्मी एवं आधुनिक गीतों ने ले लिया है।

(ख) संस्कार गीतों के संरक्षण की चुनौतियाँ

संस्कार गीत मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे हैं। वर्तमान समय में लोकगायकों की घटती संख्या, युवाओं की कम रुचि तथा लिखित एवं डिजिटल अभिलेखन के अभाव के कारण इनके संरक्षण की चुनौती बढ़ गई है। यदि समय रहते इन गीतों का संकलन, दस्तावेजीकरण और प्रचार-प्रसार नहीं किया गया, तो यह अमूल्य लोकधरोहर विलुप्त होने के खतरे में पड़ सकती है।

(ग) नई पीढ़ी में लोकपरंपराओं के प्रति दृष्टिकोण

नई पीढ़ी का एक वर्ग आधुनिक संस्कृति की ओर अधिक आकर्षित है, जिसके कारण लोकपरंपराओं के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम हुई है। फिर भी अनेक युवा लोकसंस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयासरत हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सोशल मीडिया के माध्यम से संस्कार गीतों और लोकपरंपराओं को नई पहचान मिल रही है। इससे इन गीतों के प्रति जागरूकता बढ़ रही है और उनके संरक्षण की संभावनाएँ मजबूत हो रही हैं।

8. निष्कर्ष

संस्कार गीत जिला सिरमौर की समृद्ध लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। ये गीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं, लोकविश्वासों तथा सामाजिक मूल्यों के संवाहक भी हैं। जन्म, विवाह, उपनयन और मृत्यु जैसे विभिन्न संस्कारों से जुड़े ये गीत लोकजीवन की भावनाओं, रीति-रिवाजों और सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। इस दृष्टि से सिरमौर के संस्कार गीतों का सांस्कृतिक महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के संरक्षण में संस्कार गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से सांस्कृतिक ज्ञान, सामाजिक मान्यताओं तथा लोकपरंपराओं का हस्तांतरण करते रहे

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

हैं। इनके माध्यम से स्थानीय बोली, लोकभाषा, पारिवारिक संबंधों और सामुदायिक जीवन के विविध पक्ष सुरक्षित रहते हैं। अतः संस्कार गीतों का संरक्षण लोकसांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के समान है।

वर्तमान समय में आधुनिकता, वैश्वीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण संस्कार गीतों की परंपरा अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इसलिए इनके संरक्षण हेतु दस्तावेजीकरण, शोध, डिजिटल अभिलेखन तथा शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनके समावेश की आवश्यकता है। यदि समाज, शिक्षण संस्थान, शोधकर्ता तथा सांस्कृतिक संगठन मिलकर प्रयास करें, तो इन गीतों को नई पीढ़ी तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जा सकता है।

भविष्य में संस्कार गीतों के व्यापक संग्रह, प्रकाशन, डिजिटल संरक्षण तथा लोकसंगीत संबंधी अनुसंधान की अपार संभावनाएँ हैं। साथ ही, युवाओं को लोकसंस्कृति से जोड़ने के लिए सांस्कृतिक उत्सवों, कार्यशालाओं और लोकसंगीत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। इस प्रकार सिरमौर के संस्कार गीत न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और सांस्कृतिक चेतना के महत्वपूर्ण स्रोत भी बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, वासुदेव शरण. लोकसाहित्य की भूमिका। इलाहाबाद: साहित्य भवन, 2008।
उपाध्याय, कृष्णदेव. लोकसाहित्य की रूपरेखा। प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 2010।
दुबे, श्यामचरण. भारतीय लोक संस्कृति। नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2012।
परमार, यशवंत सिंह. हिमाचल प्रदेश का इतिहास। शिमला: हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, 2015।
शर्मा, हरिराम. हिमाचल प्रदेश की लोकसंस्कृति। शिमला: हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, 2014।
शर्मा, ओमचंद हांडा. हिमाचल की लोक परंपराएँ। नई दिल्ली: इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, 2006।
ठाकुर, बी. आर. हिमाचल प्रदेश का लोकसाहित्य। शिमला: भाषा एवं संस्कृति विभाग, 2011।
नौटियाल, शिवानंद. भारतीय लोकगीत : परंपरा और संस्कृति। नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स, 2013।
हिमाचल कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी। हिमाचल प्रदेश के लोकगीत। शिमला: अकादमी प्रकाशन, 2016।
भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश। सिरमौर जनपद की लोकसंस्कृति एवं लोकगीत। शिमला: भाषा एवं संस्कृति विभाग, 2018।
नेगी, विद्या चंद. हिमालयी लोकसंस्कृति। नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, 2011।
भारतीय लोककला मंडल। लोकगीत और लोकजीवन। उदयपुर: भारतीय लोककला मंडल प्रकाशन, 2009।
विभिन्न शोध-प्रबंध एवं शोध-पत्र, संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।
विभिन्न शोध-प्रबंध एवं शोध-पत्र, संगीत विभाग, Eternal University, बड़ू साहिब, सिरमौर।
स्थानीय लोकगायक, लोकगायिकाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों से प्राप्त मौखिक साक्षात्कार एवं क्षेत्रीय सर्वेक्षण।